170

डॉ. उमेश कुमार सिंह

उमेश कुमार सिंह का जन्म नागौला, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश में वर्ष 1962 ई. में हुआ। बहनों में बड़े होने के नाते जिम्मेदारियाँ निभाने की सौगात भी जन्मजात प्राप्त हुई। ग्रामीण अंचल में पिताश्री श्री रतन सिंह तथा माता श्री श्रीमती पाना देवी के आँचल गँव में पलने का अवसर मिला। प्राइमरी शिक्षा गाँव के स्कूल में प्राप्त करने के बाद ीं और दसवीं अन्य कस्बों से की। तदोपरांत उच्च शिक्षा अलीगढ़ मुस्लिम र्सिटी से तथा एम.फिल. एवं पी–एच.डी. का शोध कार्य जवाहरलाल नेहरू र्सिटी, नई दिल्ली से पूर्ण किया। इसके बाद अंबेडकर नगर, दक्षिणपुरी और तिगड़ी की झुग्गी–झोपड़ियों स्कों के लिए चलाई जाने वाली कक्षाओं में देर रात तक हिंदी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का कार्य किया। इसके त विधिवत प्रथम शिक्षण कार्य करने का अवसर इंडियन स्कूल, सल्तनत ऑफ ओमान में मिला। भारत में विज्ञान संस्थान, दोना पावला, गोवा में राजभाषा अधिकारी के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इसके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा महाराष्ट्र, भारत में एम.ए. एम.फिल. एवं च.डी. की कक्षाओं में शिक्षण कार्य करने का अवसर मिला।

प्रकाशित पुस्तकें : 1. गुरु नानक देव और संत रविदास की कविता : एक तुलनात्मक अध्ययन, 2. वृंद : समाज और संस्कृति, 3. पहली रात का अंत (कहानी संग्रह), 4. दुख–सुख के सफर में (आत्मकथा) 5. ाँ विश्व हिंदी सम्मेलन (संपादित पुस्तक), 6. समुद्र मंथन, 7. सागर शक्ति, 8. सागर बोध, 9. लहरें, दित पुस्तकें) 10. आत्मकथा "दुख–सुख के सफर में " (भाग–2) का लेखन कार्य जारी।

पूर्व उत्तरदायित्व : सह–अध्येता / फैलो, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला, हिंदी लेक्चरर, इंडियन , सल्तनत ऑफ ओमान, हिंदी चेयर / विजिटिंग प्रोफेसर हिंदी, भारतीय अध्ययन केंद्र, अजरबैजान र्सिटी ऑफ लेंगुएज, बाकू, अजरबैजान तथा हिंदी चेयर / विजिटिंग प्रोफेसर हिंदी, महात्मा गांधी संस्थान, संकाय, स्कूल ऑफ इंडियन स्टडीस, रिपब्लिक ऑफ मॉरीशस, मोका, मॉरीशस आदि में हिंदी अध्यापन।

सदस्य, भारतीय प्रतिनिधि मण्डल, आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयार्क USA वर्ष 2007 ई., सदस्य, ास प्रतिनिधि मण्डल, रिपब्लिक ऑफ मॉरीशस 2018 ई. एवं सदस्य भारतीय प्रतिनिधि मण्डल, भारत ार, विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस, वर्ष 2018 ई. के सरकार के प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में भाग।

इसके अतिरिक्त सदस्य सचिव, नगर राजभाषा समिति गोवा एवं वर्धा महाराष्ट्र का कार्य।

अवार्ड : अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान, मॉरीशस हिंदी साहित्य अकादेमी, मॉरीशस वर्ष 2018 ई., श्री संत ास नेशनल अवार्ड दिल्ली, 2001 ई., भारतेन्दु हरिश्चंद्र राजभाषा सम्मान तथा भारत सरकार के प्रशस्ति 996 ई. से 2006 ई. तक प्रत्येक वर्ष।

विशेष रुचि : लेखन कार्य, यात्रा, सामाजिक एवं शिक्षण कार्य।

भाषा ज्ञान : हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, बृजभाषा, चीनी भाषा।

संप्रति : एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी तथा तुलनात्मक विभाग, साहित्य विद्यापीठ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,गांधी हिल्स, वर्धा–442005 महाराष्ट्र, भारत।

वर्तमान पता : हाउस–डी. 14, शमशेर शंकुल, इंटरनेशनल हिंदी यूनिवर्सिटी केम्पस, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा–442001 महाराष्ट्र, भारत।

ई–मेल : umesh_jnu@rediffmail.com मोबाइल / सचल भाष : 09423307797

ISBN : 978-93-89882-18-6

साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कालोनी,
(नियर संगम सिनेमा), लोनी बॉर्डर,
गाजियाबाद-201102

कलम का योद्धा

सम्पादक : डॉ. उमेश कुमार सिंह

सम्पादक : डॉ. उमेश कुमार सिंह

कलम का योद्धा

स्व प्रमाणित

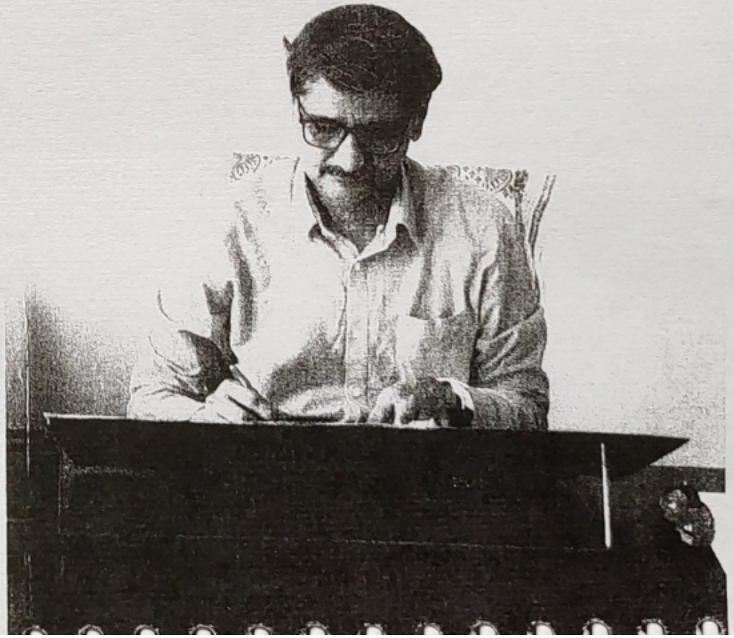

रानी हारीं।
राजा हारे।
परम निरंकुश
महाभिमानी
लग गये किनारे

हम जीते हैं।
हम जीतेंगे।
कलम के सहा
कलम के सहरे
कलम के सहा

सुरेश चन्द्र

171

कलम का योद्धा

सम्पादक
डॉ. उमेश कुमार सिंह

स्व प्रमाणित

साहित्य संस्थान
गाजियाबाद-201102

172

ISBN : 978-93-89882-18-6

© : लेखक एवं लेखिकाएँ

मूल्य : ₹ 950/=

प्रथम संस्करण : सन् 2021 ई.

प्रकाशक : साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कॉलोनी,
(निकट संगम सिनेमा)
लोनी बार्डर, गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 9968047183
Email : fatehchand058@gmail.com

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110 094

कवर डिजाइन : एम. डी. सलीम

मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110 093

Kalam Ka Yoddha
Edited by *Dr. Umesh Kumar Singh* Price ₹ 950.00

प्राक्कथन

डॉ. सुरेश चन्द्र साहित्य जगत् के चर्चित हस्ताक्षर हैं। अब से तीस वर्ष पहले से मेरे मित्र बने थे। मैं बात उस दौर की कर रहा हूँ, जब सुरेश चन्द्र मेरे साथ अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ में वर्ष 1990-91 में पढ़ा करते थे। मैं एम. ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष में पढ़ता था और सुरेश चन्द्र एम. ए. हिन्दी प्रथम वर्ष के छात्र थे। इस अंतर को बहुत अधिक नहीं माना जा सकता है। मैं उन दिनों अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन में प्रेसिडेंट का चुनाव लड़ा था। तब सुरेश चन्द्र मेरे अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन में प्रेसिडेंट के चुनाव के लिए निर्धारित दो में से एक (प्रथम) प्रस्तावक थे। उन्होंने यूनियन हॉल में मेरे नाम के लिए अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई थी। सच मैं उस दिन सुरेश चन्द्र ने अद्भुत साहस का परिचय दिया। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ से एम. ए. करने के बाद मैं शोधकार्य हेतु जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, नयी दिल्ली चला गया। सुरेश चन्द्र ने अपना पी-एच. डी. तक का अध्ययन अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ से ही पूरा किया।

डॉ. सुरेश चन्द्र जब धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़ में वरिष्ठ प्रवक्ता थे, उन्होंने डॉ. अम्बेडकर के मिशन को गति देने के उद्देश्य से "दलित जन उद्बोध" नामक त्रैमासिक पत्रिका का सम्पादन प्रारम्भ किया था। पत्रिका के प्रवेशांक का लोकार्पण भव्य समारोह में हुआ था। उस लोकपर्ण समारोह के मुख्य अतिथि अरुणाचल प्रदेश के पूर्व राज्यपाल महामहिम श्री माता प्रसाद जी थे। समारोह-संचालक की भूमिका मैंने निभायी थी। अपने वक्तव्य में डॉ. सुरेश चन्द्र ने कहा था कि :

मिटाओ जितना मिटा सको,
मैं लकीर लम्बी खीचूँगा।
तुम बोओ बीज बबूल के,
चलना मैं काँटों पर सीखूँगा ॥

मुझे अच्छी तरह याद है कि समारोह में उपस्थित जनों ने डॉ. सुरेश चन्द्र के बेजोड़ संकल्पबद्ध सर्जनाबद्ध मूल्यबोध का बयान करने वाली उक्त पंक्तियों को सुन कर उन्हें शाबाशी दी थी।

स्व प्रमाणित

डॉ. सुरेश चन्द्र के लेखन का पुस्तकाकार प्रकाशन सन् 2002 ई. से प्रारम्भ

173

हुआ। वे पूरी गुणवत्ता और ईमानदारी के साथ साहित्याकाश की ऊँचाई की ओर अग्रसर हैं। उनका अब तक प्रकाशित साहित्य अग्रांकित है:

शोधालोचना ग्रन्थ -

1. समकालीन मूल्यबोध और "संशय की एक रात", 2. बीसवीं सदी का रामकाव्य और मूल्यबोध, 3. भक्ति आन्दोलन और मध्यकालीन हिन्दी भक्ति काव्य, 4. रचनाधर्मिता की परख, 5. मणिपुर में हिन्दी की विकास-यात्रा, 6. दलित-चिन्तन की दिशाएँ, 7. नरेश मेहता की काव्य-साधना, 8. साहित्य और मानवीय सरोकार, 9. दलित-विमर्श से आलोचना तक, 10. शब्द-संग्राम के दलित सेनापति माता प्रसाद, 11. आधी दुनिया का पूरा सच।

सम्पादित ग्रन्थ -

1. श्रीप्रकाश मिश्र की साहित्य-साधना की परख, 2. दलित-विमर्श के महानायक माता प्रसाद, 3. राष्ट्रवाद के मोरचे से, 4. प्रेम कुमार का साक्षात्कार साहित्य : मूल्यांकन के विविध पक्ष, 5. हिन्दी दलित-आत्मकथा साहित्य का मूल्यांकन।

सर्जनात्मक कृतियाँ -

1. कर्मण्येवाधिकारस्ते (कविता संग्रह), 2. भगवान का अनुभव (कविता संग्रह), 3. महाभिनिष्क्रमण (काव्य नाटक), 4. दलितों के सूर्य (नाटक), 5. मनुवादी दलित (नाटक), 6. समवादी सत्ता (नाटक), 7. दलित और साँपनाथ की जीत (कविता संग्रह)।

स्पष्ट है कि डॉ. सुरेश चन्द्र व्यापक साहित्यिक मूल्यों के फलक पर मानव सभ्यता के उन्नयन का युद्ध लड़ रहे हैं।

"भगवान का अनुभव" में एक कविता है - "हमारी जीत"। इस कविता में डॉ. चन्द्र ने लिखा है कि :

रानी हारीं।
राजा हारे।
परम निरंकुश
महाभिमानी,
लग गये किनारे।
हम जीते हैं।
हम जीतेंगे -
कलम के सहारे।
कलम के सहारे !!
कलम के सहारे !!!

डॉ. सुरेश चन्द्र के साहित्य के अध्ययन के क्रम में जब मैंने उनकी "हमारी जीत" शीर्षक कविता पढ़ी तब उनके लिये अनायास मेरे मुख से निकाला - **कलम का योद्धा।** वे ऐसे कर्मवीर हैं जो निरंतर अपने रचनाकर्म में निमग्न रहते हैं।

मैं पूर्व में ही उनके साहित्यिक रचना कर्म से भलीभाँति परिचित हो चुका था। कुछ दिन पहले उन्होंने मुझे हैदराबाद में अपनी कुछ नयी रचनात्मक पुस्तकों की प्रतियाँ भेंट की थीं। उनके रचना कर्म से पुनः साक्षात्कृत होने का दूसरा अवसर प्राप्त होने से मेरी खुशी दुगुनी ही नहीं हो गयी बल्कि मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा था।

मेरे स्मृति पटल पर डॉ. सुरेश चन्द्र के जीवन की पुरानी यादें एकदम ताज़ा हो आयी हैं। साहित्य जगत् के असमान्तर दलित हस्ताक्षर डॉ. सुरेश चन्द्र का जन्म, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश के एक बहुत छोटे-से गाँव नगला नन्नी में हुआ था। मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ कि स्वत्व चेतस् व मानव मूल्यों के स्थापन, संरक्षण और संवर्धन के लिये प्रतिबद्ध डॉ. चन्द्र तमाम विपरीतताओं से लोहा लेते हुए केवल और केवल कलम के बल पर ही केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर के पद तक पहुँचे हैं। डॉ. चन्द्र का सफर इतना कठिन रहा है कि इतिहास के पन्नों में उनका संघर्षमय विवरण भी स्वर्णाक्षरों में अंकित किया जाना चाहिए। आशा ही नहीं, मुझे पूरा विश्वास है कि भविष्य में इसका निर्धारण समय द्वारा अवश्य किया जाएगा।

एक रचनाकार के रूप में डॉ. सुरेश चन्द्र का साहित्य जगत् में योगदान अभूतपूर्व है। उन्होंने दलित-साहित्य के साथ-साथ अपनी पहुँच ग़ैर दलित-साहित्य में भी बनायी है। उनकी लेखनी का फलक अत्यंत विस्तृत और बहुआयामी है। डॉ. सुरेश चन्द्र की सर्जनात्मकता में मानवता का पारावाररहित प्रकाश सन्निहित है। इस सर्जनात्मक शक्ति के बल पर उनका साहित्यिक योगदान सदियों-सदियों तक अक्षुण्ण बनकर स्वयं आलोकित होता रहेगा।

रचनाधर्मिता के अनेक मोरचों पर डॉ. सुरेश चन्द्र द्वारा लड़े जा रहे मूल्य-पतन के शिकार लोगों के हित के युद्ध को बुद्धिजीवियों द्वारा व्यापक स्तर पर परखा जा रहा है। बेहद हर्ष का विषय है कि पत्रिकाओं और ग्रन्थों में उनके साहित्य की आलोचनाएँ निरन्तर प्रकाशित हो रही हैं। मानव सभ्यता के सम्यक् उन्नयन हेतु दलितवर्ग कलम के योद्धा डॉ. सुरेश चन्द्र के साहित्यक वैशिष्ट्य को देश-देशान्तर में अधिकाधिक लोग जानें, इस उद्देश्य से मैंने सोचा कि उनकी रचनाओं को केंद्र में रखकर लिखे गए आलोचना लेखों का सम्पादन करके ग्रन्थ प्रकाशित कराया जाए। मैं अपनी सोच को व्यावहारिक बनाने के लिए निर्णयबद्ध हुआ, जिसका परिणाम है - प्रस्तुत सम्पादित ग्रन्थ "कलम का योद्धा"।

इस ग्रंथ में कुल 49 आलोचना लेख संगृहीत हैं। सभी लेखों को मैंने रुचि

इसी कृति में उन्होंने भक्तिकाल की पूर्व पीठिका का वर्णन करते हुए रैदास, कवीर, जायसी, दादू, सूर, तुलसी, मीरा, रहीम, और रसखान के काव्यों के उदाहरण दिए हैं। भक्ति आन्दोलन को लेकर इन्होंने विजेन्द्र नारायण का उद्धरण देते हुए वताया है कि दक्षिण भारत के तमिल भाषी क्षेत्रों में छठी और नवीं सदी के बीच विष्णु भक्त आलवारों और शिवभक्त नयनारों ने हिन्दुत्व का नवीकरण किया। उन्होंने बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रचार में इस प्रकार अवरोध उत्पन्न किया। यह संत, कवि गाँव-गाँव में घूमते थे और राजा, ब्राह्मणों, किसानों को प्रेरित करते थे। ये उनका धार्मिक रूपांतरण करते थे। उनके गीतों में व्यक्त धार्मिक संवेदना वर्ण और जाति का अतिक्रमण करती थी। उन्होंने भारतीय भाषाओं में पहले पद लिखे। आलवारों और नयनारों ने भक्ति आन्दोलन को सही दिशा देने के लिए जो कदम उठाए वे सराहनीय हैं। जाति से तटस्थ रहते हुए जन-जन के लिए भक्ति मार्ग उन्होंने ही खोला। भक्ति को आडंबरों से मुक्त किया। संस्कृत पंडित होते हुए भी उन्होंने जनभाषाओं में रचनाएँ कीं, जिनमें हिन्दी भी थी।

''मणिपुर की हिन्दी विकास-यात्रा'' पुस्तक में हिन्दी संगठनों की भूमिका को महत्त्वपूर्ण बताया गया है। मणिपुर भाषाओं और बोलियों की दृष्टि से जितना समृद्ध राज्य है उतना समृद्ध दुनिया में शायद ही कोई दूसरा राज्य होगा। इस राज्य की भाषिक समृद्धि का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि कुल 23 लाख 88 हजार 634 जनसंख्या वाले इस राज्य में मणिपुरी के अतिरिक्त 33 भाषाएँ ऐसी हैं जिन्हें भारत सरकार से मान्यता प्राप्त है। इस संबंध में एक सुखद आश्चर्य करने वाला तथ्य यह है कि मणिपुर के 9 जनपदों में से 300 गाँव वाला एक जनपद उखरूल है, जिसके प्रत्येक गाँव की भाषा अलग है। डॉ. सुरेश चन्द्र ने बताया है कि मणिपुर में हिन्दी प्रचार करने में कन्नौज, वृंदावन, इलाहाबाद के कुछ ब्राह्मणों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो मध्यकाल में मणिपुर राज्य में आए और यहाँ पर ब्रज बोली का प्रवेश हुआ। इन्होंने अपने ब्राह्मण वंश स्थापित किए। राजा गरीब निवाज ने, जो उदार कृष्ण भक्त थे, अपने राज्य में बांग्ला, ब्रज बोली और मैथिली भाषा के शब्दों के मिले-जुले रूप ब्रजबुलि में भजन गाने की इजाजत दे दी। इस प्रकार राजा, सरकार, मंत्री, मुख्यमंत्री, देश, शासन आदि शब्द मणिपुरी भाषा में स्थान पा गए।

मणिपुर एक सुरम्य प्रदेश है। डॉ. सुरेश चन्द्र जी ने ''कर्मण्येवाधिकारस्ते'' में ''मणिपुर सुरम्यम्'' एक कविता लिखी है। स्थानाभाव से उसके बीचल [illegible] को हम आगे उद्धरित कर रहे हैं। एक छंद में मणिपुर की इरोम शर्मिला का वर्णन है जो बारह वर्षों से वहाँ से स्पेशल फोर्स के हटाने के लिए अनशन कर रही हैं और उन्हें अस्पताल में नाक के रास्ते खुराक पहुँचायी जा रही है। इसके साथ [illegible] में मैरीकॉम का भी वर्णन है जिन्होंने ओलंपिक में मुक्केबाजी खेल में [illegible]

"तुम रुके कि विश्व से मनुष्यता मिटी,
दिव्य ज्ञान की प्रतीक सभ्यता मिटी।
विषाक्त विश्व हेतु आशुतोष से बढ़ो!
पियो गरल, करो अमर, नवीन श्वास दो।"

(उद्धृत, पृ. 206)

डॉ.वार्ष्णेय की काव्य रचना की परख के अंत में सुरेश चन्द्र जी ने कवि की मानवतावादी चेतना व छटपटाहट का आकलन इस प्रकार से किया है "मानवतावादी सरोकारों की रक्षा के लिए उनकी वाणी आक्रोश से भर गई है। मानवतावादी जीवन मूल्यों की स्थापना का महान उद्देश्य उनके काव्य की पहचान बनाने में सक्षम है।"

(पृ. 206)

"रचनाधर्मिता की परख'' कृति की समीक्षा करते समय मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि सुरेश चन्द्र जी ने विभिन्न साहित्यकारों की रचनाओं का अध्ययन कर मानव हित की साधक रचनाओं को अपनी कृति के केंद्र में रखा है। यहाँ सुरेश चन्द्र जी मूल्यबद्ध रचनाधर्मिता के पारखी बने हैं। उनकी पारखी दृष्टि व्यक्ति विशेष पर न जाकर मानवता रक्षक साहित्य पर पड़ी है। उनका मानना भी है की रचनाधर्मिता की परख दलित-आलोचनाबोध के आलोक में की गई है। दलित-आलोचनाबोध भेद रहित मानव पोषक सम्यक् न्याय की अवधारणा पर आधारित है। दलित और गैरदलित साहित्यकारों की रचनाओं में निहित विशुद्ध मानवीय दृष्टिकोण (दलितों का अधिकार, शिक्षा के प्रति जागरूकता, सामाजिक न्याय, नारी सम्मान, नारी स्वातंत्र्य चेतसता, पर्यावरण आदि) जो समाज के उपेक्षित वर्ग को एक नई दिशा देता है, उसे सुरेश चन्द्र जी ने अपनी आलोचना कृति में मुख्य स्थान दिया है। सुरेश चन्द्र जी का यह प्रयास सराहनीय और प्रशंसनीय है। सुरेश चन्द्र जी ने तटस्थतानिष्ठ आलोचक धर्म का पूर्ण पालन करते हुए एक सफल आलोचक का परिचय दिया है। उन्होंने दलित व गैरदलित साहित्यकारों की रचनाओं में मानवता पोषक विचारधारा की परख करके सच्चे दलित आलोचक का परिचय दिया है। ''रचनाधर्मिता की परख'' ग्रन्थ का शब्द-शब्द और वाक्य-वाक्य आद्यन्त दलित-आलोचनाबोध के आलोक से आलोकित है। "रचनाधर्मिता की परख'' ग्रन्थ का प्रत्येक अध्याय इस तथ्य का प्रमाण है कि यह ग्रन्थ दलित-आलोचनाबोध का दस्तावेज है।

स्व प्रमाणित

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

GET IT ON Google Play

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker